Sahapedia
C 1/3, First Floor
Safdarjung Development Area
New Delhi 110016
+91-11-41065046/47
www.sahapedia.org

प्रेस विज्ञप्ति

इंडिया हेरिटेज वॉक फेस्टिवल 2018

- **चार्ल्स कोरिया की कृति पिंक सिटी में जवाहर कला केंद्र की खोजबीन**
- **जयपुर में टेक्सटाइल परंपरा और ब्लॉक प्रिंटिंग की पड़ताल**

जयपुर, 10 फरवरी: किसी समय प्रिंस अल्बर्ट और महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के सम्मान में गुलाबी रंग में तब्दील राजस्थान की राजधानी जयपुर मध्यकाल से ही शानदार परंपरागत टेक्सटाइल, राजशाही किलों और महलों के लिए मशहूर रहा है। लेकिन यहां एक ऐसा भी आधुनिक महल है जो पर्यटकों और कलाप्रेमियों की भीड़ आकर्षित करने में सदाबहार माना जाता है– यह है विख्यात वास्तुविद चार्ल्स कोरिया द्वारा बनाया गया जवाहर कला केंद्र (जेकेके)।

विशेष जरूरतमंद सैलानियों के लिए इस भव्य सांस्कृतिक केंद्र की वास्तुकलात्मक सैर इंडिया हेरिटेज वॉक फेस्टिवल (आईएचडब्ल्यूएफ) कार्यक्रम के तहत निर्देशित और आयोजित की जाएगी। इस कार्यक्रम के तहत दूसरी सैर भागीदारों को गुलाबी शहर के वस्त्र उद्योग तक ले जाएगी।

भारतीय कला एवं संस्कृति की ऑनलाइन विश्वकोष सहपीडिया (sahapedia.org) और यस बैंक के वैचारिक मंच यस ग्लोबल इंस्टीट्यूट की सांस्कृतिक शाखा यस कल्चर की ओर से संयुक्त रूप से आयोजित महीने भर कई शहरों की सैर कराने वाले कार्यक्रम आईएचडब्ल्यूएफ 2018 के तहत 20 मेजबान शहरों में जयपुर को भी शामिल किया गया है। इसके तहत नागरिकों को अपने शहरों और नगरों की मूर्त एवं अमूर्त विरासत की पड़ताल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

राष्ट्रीय स्तर पर धरोहर वास्तुकला के पुरस्कार विजेता और यूनेस्को, राष्ट्रीय संग्रहालय तथा सिटी पैलेस संग्रहालय में अभिगम प्रबंधन सलाहकार सिद्धांत शाह जेकेके का खूबसूरत वर्णन करते हुए सैलानियों की खास जरूरतों का मार्गदर्शन करने के लिए 13 फरवरी को पहला भ्रमण कार्यक्रम संचालित करेंगे। इस सांस्कृतिक केंद्र के लिए विशेष रूप से निर्धारित सैर–सपाटे में सैलानियों को समझाया जाएगा कि जेकेके क्यों सच्चे मायने में जयपुर, जय सिंह द्वितीय और जवाहरलाल नेहरू की उपमा का प्रतीक बन गया है। वास्तुकलात्मक सैर के तहत 8 मीटर ऊंची चारदीवारों को शामिल किया जाएगा जिनमें प्रशासनिक खंड, प्रदर्शनी दीर्घा, ओपन–एयर थियेटर, पुस्तकालय, शयनकक्ष और कॉफी हाउस समाहित हैं। इस बिल्डिंग में हिंदू, जैन और बौद्ध ग्रंथों की कुछ शानदार पेंटिंग्स लगी हुई हैं।

Sahapedia
C 1/3, First Floor
Safdarjung Development Area
New Delhi 110016
+91-11-41065046/47
www.sahapedia.org

एक समावेशी अनुभवजन्य संस्कृति को बढ़ावा देने के मकसद से इस 90 मिनट के भ्रमण कार्यक्रम के दौरान सैलानी वास्तुकला और आकार, रंग तथा परंपरागत खूबसरूत प्रतीकों जैसे नियोजन के तत्वों से रूबरू होंगे। इन जगहों पर सुलभ पहुंच के लिए उन्हें रैम्प, व्हीलचेयर, स्पर्श–योग्य नक्शे और ब्रेल पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएंगी। इस वॉक में एक्सेस फॉर ऑल की भी भागीदारी रहेगी जो नवाचार, स्वदेशी डिजाइन तथा समर्थन के जरिये भौतिक, विशिष्ट तथा सामाजिक दायरे की सीमाओं को विस्तार देने का लक्ष्य रखती है। भ्रमण का दूसरा कार्यक्रम शनिवार 24 फरवरी को होगा, स्थानीय निवासियों को शहर के वस्त्र कारोबार से अवगत कराया जाएगा जहां स्वर्णिम रेत, नीला आसमानी और सुर्ख लाल रंग के किलों की झलक आकर्षक परंपरागत वस्त्रों पर देखने को मिलेगी और पुराने जमाने के नीले, बागरू तथा सांगानेरी ब्लॉक प्रिंटों में बने वस्त्र दिखाए जाएंगे।

निफ्ट, गांधीनगर की पूर्व छात्रा और परिधानों, सॉफ्ट होम फर्नीशिंग तथा टेक्सटाइल्स विकसित करने वाली संस्था सोल रूट्स की संस्थापक सोनल चित्रांशी ब्रेकअवे के सहयोग से इस वॉक का संचालन करेंगी। ब्रेकअवे निडर पर्यटकों को ऑफ–द–मैप यात्रा के जरिये भारत की कलात्मक एवं सांस्कृतिक धरोहर की खाक छानने में मदद करती है।

इस वॉक के तहत एक परंपरागत ब्लॉक निर्माता और प्रिंटर से भी मुलाकात कराने का कार्यक्रम है जो सैलानियों को अपने उत्कृष्ट कांसे के सांचों और हाथ के सांचों का कलेक्शन दिखाएंगे। वे बेहतरीन गोटा पट्टी और आरी वर्क (हाथ की कशीदाकारी तथा सजावटी वस्त्रों एवं वैवाहिक परिधानों पर आभूषणों की नक्काशी) देखने के लिए एक डिजाइनर के होम स्टूडियो का भी दौरा करेंगे।

इस सैर का एक और मुख्य अंश एक स्वप्रशिक्षित कलाकार से मुलाकात करना है जिन्होंने उदयपुर के प्रसिद्ध नाथद्वारा मंदिर का दौरा करने के बाद प्रेरित होकर श्रीनाथजी को कैनवास पर उतारने से अपने सफर की शुरुआत की। वह अपनी नवाचार शैली के बारे में भी बताएंगे जिसमें वह प्रत्येक कैनवास को अलंकृत करने के लिए कसब, दाबका, जरदारी के तैलचित्र से वस्त्रों को तैयार किया है और इन्हें कुंदन आभूषणों, सिल्वर प्लेट तथा असली सोने से सजाया है।

इस सैर–सपाटे और आईएचडब्ल्यूएफ 2018 के अन्य कार्यक्रमों, मैप रूट तथा पंजीकरण सूचना के बारे में विस्तृत जानकारी http://www.indiaheritagewalkfestival.com पर उपलब्ध है।

फेस्टिवल निदेशक (आईएचडब्ल्यूएफ) और सहपीडिया के सचिव वैभव चौहान कहते हैं, "इंडिया हेरिटेज वॉक फेस्टिवल 2018 उन सभी चीजों का जश्न है जिनके लिए सहपीडिया जानी जाती है। अपनी समृद्ध विरासत और संस्कृति की विश्वसनीय, प्रामाणिक और संपूर्ण

Sahapedia
C 1/3, First Floor
Safdarjung Development Area
New Delhi 110016
+91-11-41065046/47
www.sahapedia.org

विषय वस्तु निर्मित करने के प्रयास के तहत हम देशभर में सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं का एक नेटवर्क विकसित कर रहे हैं। यह उत्सव इस समस्त भारत मुहिम का एक हिस्सा है जिसमें धरोहर स्थलों को अधिक लोकप्रिय, अधिक सुगम और अधिक अनुभवजन्य बना रहे हैं।" यस बैंक के एमडी और सीईओ तथा यस ग्लोबल इंस्टीट्यूट के चेयरमैन राणा कपूर कहते हैं, "भारत को समृद्ध धरोहर और सांस्कृतिक इतिहास का वरदान मिला हुआ है जहां हर कोने में स्मारकों और वास्तुकला नमूनों की खान मौजूद हैं। हमारे राष्ट्रीय धरोहर में हेरिटेज वॉक जैसी गतिविधियों से सिविल सोसायटी की भागीदारी सुदृढ़ होती है और इन स्थलों के संरक्षण और सुरक्षा का यह एक अभिन्न हिस्सा बन गई है। इस तरह की धरोहर पर्यटन मुहिमों में स्थानीय समाज तथा नागरिकों की तहेदिल से भागीदारी और संलग्नता राष्ट्र गौरव की भावना बढ़ाने की क्षमता रखती है और साथ ही धरोहर के विकास का एजेंडा भी पूरा होता है।"

यस बैंक इंस्टीट्यूट की ग्लोकल संयोजक प्रीति सिन्हा कहती हैं, "21वीं सदी के भारत में धरोहरों की समझ ऐतिहासिक भवनों और स्मारकों की सुरक्षा से लेकर व्यापक संदर्भ में मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक स्वरूपों की सामान्य समझ और संरक्षण पर अधिक केंद्रित होने तक विकसित हुई है। दौरों, चर्चाओं और फिल्म तथा सोशल फोरम जैसे डिजिटल मीडिया के जरिये निर्मित, प्राकृतिक एवं सजीव धरोहर के साथ सक्रिय संलग्नता से यह महोत्सव ऐतिहासिक संवेदनशील नीति बनाने एवं नीति निर्धारण की दिशा में प्रबुद्ध सोच विकसित करने का एक पैमाना है।"

आईएचडब्ल्यूएफ 2018 के तहत देशभर के 20 शहरों और नगरों को शामिल किया गया है जिसमें ऐतिहासिक स्मारकों, पवित्र स्थलों, जाने–माने स्थलों, कला एवं संस्कृति के लिए मशहूर स्थानों, व्यंजनों और प्रसिद्ध व्यापारिक स्थलों का दौरा किया जाना शामिल है। इसके तहत सांस्कृतिक विषयों और व्याख्यान श्रृंखला पर आधारित एक ऑनलाइन डॉक्यूमेंटरी फिल्म समारोह भी आयोजित किया जा रहा है जिसे पूरे महीने चलने वाले लगभग 70 कार्यक्रमों की बैठकों और मिलन समारोहों से संचालित किया जाएगा।

Sahapedia is a registered society. Registration number: District East/Society/291/2011